Subject - History Hons
Degree Part II (Hons)
Paper - IV
Lecture - 28

Dr. H. N. Mahto
Deptt of History
9835007357
Date - 25.4.2020

Ques:- प्रथम अफीम युद्ध (1840-42) के कारणों एवं परिणामों की विवेचना करें।

Ans:- विश्वकेइतिहास के अध्ययन से ऐसा ज्ञात होता है कि भौगोलिक दृष्टिकोण से चीन पूर्णतः सुरक्षित रहा है। भौगोलिक दृष्टिकोण से भी वहाँ की सीमावर्ती क्षेत्र एक ओर जहाँ चीन की दीवार, समुद्र एवं जंगलों से आच्छादित क्षेत्र चीन को सुरक्षा प्रदान करती है वहीं दूसरी ओर खनीज संपदा की बहुलता ने भी चीन को सभ्यता की श्रेणी में लाने का महत्वपूर्ण साधन है। वैसे तो चीन वासी अपने आप को मानव जाति में श्रेष्ठ मानता है, फिर भी एक बार जब विदेशियों का आगमन चीन में प्रारम्भ हो गया तो फिर यह आगमन निरंतर चलता रहा और अंततः चीन विदेशियों के लिए एक महत्वपूर्ण व्यापारिक अड्डा बन गया।

1839-42 में होने वाले चीन-इंगलैंड युद्ध का वास्तविक कारण वस्तुतः अफीम की समस्या नहीं थी बल्कि अफीम केवल अन्य कारणों में से एक तात्कालिक कारण था। इस युद्ध के पीछे अन्य बहुत से कारण थे जो अंग्रेजों एवं चीनियों के बीच दिन-प्रतिदिन मतभेद पैदा करते जा रहे थे। शुरू में इंगलैंड के व्यापारी इंगलैंड के कपड़ों तथा मालों को ही जिनकी मांग चीन में थी, बेचते थे परन्तु ब्रिटिश लोगों को इतने से ही संतोष नहीं था, वे चाहते थे कि चीन में किसी ऐसे पदार्थ

Scanned with CamScanner

की खपत बढ़ाई जाय। जिससे चीन में निर्यात माल की अपेक्षा आयात माल ही अधिक बढ़ जाय और चीनी के माल को भी सोना, चाँदी के रूप में कीमत न अदा करने पड़े। इस समय तक भारतवर्ष के कई प्रदेश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रभुत्व में आ चुके थे तथा जहाँ कम्पनी के व्यापारी कम्पनी हित के लिए अफीम की खेती करने में जुटे हुए थे। इस क्षेत्र में उनका यह भी प्रयास था कि चीन को इस अफीम के लिए बाजार तैयार किया जाय और वास्तव में 1800 ई० के बाद ही इसी अफीम व्यापार के कारण चीन का सारा धन विदेशों में जाने लगा। केवल स्वास्थ्य एवं नैतिकता की दृष्टि से ही नहीं बल्कि आर्थिक दृष्टिकोण से भी अफीमों के इस व्यापार ने चीन के सामने एक महान संकट उपस्थित कर दिया। जिसके परिणामस्वरूप 1800 ई० में चीन के सम्राट ने एक आज्ञा प्रकाशित कर चीन में अफीम व्यापार को अवैध घोषित कर दिया, फलतः अंग्रेजों और चीनियों के बीच होने वाला प्रथम अफीम युद्ध एक वास्तविक रूप बन गया। इस अफीम युद्ध के निम्नलिखित कारण थे—

(1) विदेशियों के प्रति हीनता :- चीनवासी विदेशियों को अपने बराबर या स्वाधीन मानने से इन्कार करता था। John Adams ने कहा है -" वह अन्य देशों को अपने बराबर या स्वाधीन भी मानने से इन्कार करता है, नही सत्य है और पुनः लगाता है कि ब्रिटेन और चीन के राष्ट्रों और सरकारों के मध्य केवल यही एकमात्र विवादग्रस्त प्रश्न है," इसका निर्णय तो युद्ध के द्वारा ही संभव है जिसका निर्णय इंग्लैंड चाहता था।

(2) ब्रिटिश व्यापारियों द्वारा मांग ! - इंग्लैंड का व्यापारी

चीन में अपनी व्यापारिक केन्द्र स्थापित करने के प्रति दृढ़ संकल्प था। एक ब्रिटिश व्यापारी ने इंग्लैंड के आर्थिक शक्ति और उद्योगों के व्यापार को स्पष्ट करते हुए लिखा -
"Optain us but a Sale for our goods and we will Supply any Quantity. Nor indeed should our Valuable Commerce and revenue booth in India and Great Britain be permitted to remain Subject to Caprise."

अतः युद्ध अनिवार्य हो गया। पन्निकर (Pannikar) भी कहते है कि स्वतन्त्र व्यापारी जो कि राजनीति में शक्तिशाली तत्व थे युद्ध की मांग कर रहे थे।

(3) व्यापारिक प्रतिबन्ध :- चीन के शासक विदेशी व्यापारियों के ऊपर विभिन्न तरह के प्रतिबंध लगाये गये थे, व्यापारी केवल विशेष मौसम में ही कैंटन आ सकते थे। स्थायी रूप से नहीं रह सकते थे; अतः व्यापारी इन प्रतिबंधों को समाप्त करने के लिए कटिबद्ध थे जो अफीम युद्ध के लिए एक महत्वपूर्ण कारण बना।

(4) राज्य क्षेत्रातीतता का प्रश्न :- यह बात चीन के लिए सर्वविदित था कि चीनी दीवानी और फौजदारी मामलों में चीनी न्यायालय और चीनी कानून के अनुसार निर्णय आवश्यक मानते थे, परन्तु विदेशी अपने को उनसे पृथक तथा अपने को अपने देश के कानूनों के अधीन समझते थे। विश्व की शक्तिशाली शक्ति इंग्लैंड इसे स्वीकार करने के लिए तैयार न था।

(5) ब्रिटिश नीति :- अंग्रेज तथा उसके प्रशासनिक पदाधिकारी अफीम को प्रोत्साहन देने में अपनी सारी शक्ति लगा दी थी, वैसे भी चीन की

सरकार इसको रोकने के लिए दृढ़ संकल्प में थी, जिसके लिए विशेष पदाधिकारियों की भी नियुक्ति की गयी, किन्तु ब्रिटिश सरकार आर्थिक हानि को उठाने को तैयार न थी जैसा कि The committee of the London East India and China association ने सरकार को अपने स्मरण पत्र में कहा – " When we observe that the Committees of the houses of Lords and Commons have inquiride minutely into the Subjects of the Growth of Opium, the amount it Contributed to the Indian revenue and with a full Knowledge of the place of its ultimate destination have arrived without hesitation at the conclusion that it did not appear advisable to abandon no important source of revenue. We must Confess that it does seem most unjust to throw any blame or odium attaching to opium trade upon the merchants who engaged in a business thus directly and indirectly Sanctioned by the highest authority."

(6) चीनी नीति :- अफीम का व्यापार आर्थिक और नैतिक दृष्टि से चीन के लिए हानिकारक तो था किन्तु इस समस्या को सुलझाना सरल न था। चीन के शासन पर पंडित या विद्वान वर्ग का प्रभुत्व तो था किन्तु वे कूटनीति और राजनैतिक अनुभवों में शून्य थे।

अफीम की समस्या ब्रिटेन एवं चीन के बीच इस अफीम युद्ध का तात्कालिक कारण था। 1839 में चीनी सरकार ने कैंटन में एक विशेष कर्मचारी की नियुक्ति की जिसे अफीम के व्यापार का अंत

करने का कार्य सुपुर्द किया गया और जिसने ब्रिटिश व्यापारियों को इस कार्य के लिए विवश किया कि उनके पास अफीम की जो पेटियाँ थी उन सबको चीनी सरकार को सुपुर्द कर दें ताकि उन्हें नष्ट कर दिया जाये। यह प्रस्ताव अंग्रेजों के लिए एक स्पष्ट चुनौती थी जिसको वे युद्ध जैसी शक्ति के उपयोग द्वारा सदा के लिए समाप्त कर देना चाहते थे और इस प्रकार 1839ई० में ब्रिटिश जहाजों ने कैंटन को घेर लिया तथा प्रथम आंग्ल-चीनी युद्ध या अफीम युद्ध का श्री गणेश हुआ।

1839-42 तक चीन और ब्रिटेन के मध्य युद्ध जारी रहा, जिसमें अस्त्र-शस्त्र की दृष्टि से चीनी लोग ब्रिटेन का मुकाबला न कर सके और उनकी भारी पराजय हुई। अंत में 29 अगस्त 1842 के दिन चीन और ब्रिटेन में युद्ध की समाप्ति के लिए जो संधि हुई वह नानकिंग की संधि के नाम से विख्यात है जिसकी शर्तें निम्नलिखित थी :-

(1) ब्रिटिश लोगों को न केवल कैंटन में बल्कि अमाय, फू-चाऊ, निंगपो तथा शंघाई में भी बसने तथा व्यापार करने का भी अधिकार हो।

(2) होंग पर ब्रिटिश व्यापारियों की देनदारी के रूप में चीन ने 60 लाख डॉलर नष्ट अफीम के लिए तथा 1 करोड़ 20 लाख डॉलर इस अभियान के खर्चे के रूप में देना स्वीकार किया।

(3) हांग-कांग का द्वीप ब्रिटेन को दे दिया गया।

(4) चीन और ब्रिटेन के राज्य कर्मचारी परस्पर समानता के आधार पर रहे।

(5) चीन के आयात-निर्यात माल पर किसी हिसाब से कर।

लगाया जाय उसकी दरें निश्चित कर ली जाय।

(6) चीनी सरकार ब्रिटेन को 30 ~~करोड़~~ लाख रुपया हर्जाना दे।

परिणाम (Results) :- प्रथम अफीम युद्ध नानकिंग की संधि के साथ समाप्त हुआ, परन्तु इसके अत्यन्त महत्वपूर्ण परिणाम निकले। यह सन्धि चीन के लिए अत्यन्त कड़वा विष थी तो अंग्रेजों के लिए चीन में उनकी साम्राज्यवा सुबह की पहली किरण। इस सन्धि के निम्नलिखित महत्वपूर्ण परिणाम निकले :-

(A) **ब्रिटेन को लाभ:** नानकिंग की सन्धि से ब्रिटेन को जो महत्वपूर्ण व्यापारिक लाभ हुए थे, उससे ब्रिटेन ने चीन में साम्राज्यवादी पताका का पहला झण्डा गाड़ दिया। सबसे उल्लेखनीय बात तो यह थी कि जिस अफीम व्यापार को लेकर युद्ध लड़ा गया था उसके विषय में तो नानकिंग की सन्धि में कुछ भी नहीं कहा गया। ब्रिटेन को क्षतिपूर्ति के रूप में कुल 2 करोड़ 10 लाख डालर की धनराशि प्राप्त हुई। उसका चीन के पांच बन्दरगाहों पर प्रभुत्व स्थापित हो गया। इसके तुरन्त पश्चात् 8 October 1843 ई० को इंगलैंड ने चीन से बोग की सन्धि के तहत राज्यक्षेत्रातीत अधिकारों की व्यवस्था भी कर ली।

(B) **चीन में साम्राज्यवाद :-** नानकिंग की संधि से प्रभावित होकर अब फ्रांस, अमेरिका, बेल्जियम, प्रशा, हॉलैण्ड, और पुर्तगाल आदि भी चीन में अपने प्रभाव की वृद्धि की ओर उन्मुख हुए। एक दशक के भीतर इन राष्ट्रों ने भी उन अधिकारों को प्राप्त कर लिया जिसे इंगलैंड ने नानकिंग की संधि से प्राप्त किया था। चीन की एकान्तता का अन्त हुआ और चीन का द्वार साम्राज्यवादी शक्तियों के लिए खुल गया।

=

Dr. M.N. Mahto
Associate Professor
Deptt of History
R.N. College, Pandaul